OM-10- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 27-Jul-21 1:48 PM Page 2

होगी पवित्रता... तो स्वतः होगी रक्षा

पवित्रता हमारे अंदर एक नया उमंग-उत्साह पैदा करती है। और उसमें जो रक्षा करने वाली बात है, तो रक्षाबंधन का पर्व तो चार चांद ही लगा देता है। रिश्तों में सबसे पावन रिश्ता भाई-बहन का माना जाता है, जहाँ रिश्तों में पवित्रता की खुशबू समाई हुई होती है। इसी भाव के रूप में ही हम पवित्रता से सुरक्षा महसूस करते हैं।

परंतु आज के परिदृश्य में हम देखें तो ऐसे पावन रिश्तों की खुशबू ही समाप्त होती नज़र आ रही है। चाहे किसी भी रिश्ते में देखें, भले ही वो रिश्ता पिता-पुत्र का हो, भाई-बहन का हो या और कोई, सब में खटास व दूरी-दरारें दिखाई पड़ती हैं। जहाँ रिश्तों में पवित्रता का इत्र नहीं वहाँ सुरक्षा कहाँ! पवित्रता ही सुरक्षा का कवच है। अगर हम भारत का इतिहास देखें तो पवित्रता की मान्यता हमेशा से रही है और इसी पर बहस भी होती रहती है। जहाँ रिश्तों में पवित्रता की सुगंध होती है वहाँ की

ब्र.कु. गंगाधर

जीवनशैली के तो क्या कहने! और आने वाला समय शायद इसी जीवनशैली की मांग कर रहा है। पूरा विश्व आज सिर्फ और सिर्फ ऐसे रिश्तों की तलाश कर रहा है जिसमें इस इत्र की सुगंध हो। जहाँ पर हर मनुष्य स्नेह और प्यार से एक-दूसरे से मिले, बात करे, एक-दूसरे का सम्मान करे लेकिन आज हम खुद भी असुरक्षित हैं और दूसरे भी हमसे असुरक्षित महसूस करते हैं। अब जहाँ पवित्रता की कमी है वहाँ सुख-शांति-समृद्धि-सुरक्षा की कल्पना करना भी बेमानी है।

अब अपने पावन, मधुर, सुखदाई और सुरक्षा की महसूसता कराने वाले सम्बंधों को पुनः कैसे प्राप्त किया जाये? ये कब प्राप्त होंगे? ये सवाल मन-मस्तिष्क में बिना उठे नहीं रहते। पर आपको हम खुशखबरी सुना रहे हैं कि परमात्मा ऐसी दुनिया, जहाँ हर क्षेत्र में पवित्रता का वास होगा, ऐसी सृष्टि की स्थापना के निमित्त इस धरा पर अवतरित हुए हैं और पवित्रता के द्वारा पावन दुनिया की स्थापना का बीड़ा उठाया हुआ है। इसका संकेत शास्त्रों में भी है। इस पवित्रता की खुशबू को प्राप्त करने के लिए हम सबको अपनी समझ बढ़ाने की आवश्यकता है। जब हम दो भाव में जीते हैं, जिसमें एक है शरीर का भाव, दूसरा आत्मा का भाव, तो जब शरीर के भाव में होते हैं तो हमको दुःख महसूस होता है। शरीर के भाव में जीना अर्थात् अपवित्रता के भाव में जीना। आत्मा के भाव में जीना अर्थात् पवित्रता की ओर बढ़ना। और ये हमारा निजी अनुभव भी है कि जब हम इस भाव में जीने लग जाते हैं तो हर किसी से हमारा सम्बंध स्वतः ही ठीक हो जाता है। इसलिए हर आत्मा को इस भाव से देखना, सुनना और महसूस करना... उस स्वर्णिम दुनिया की ओर अग्रसर होना है, जिसकी कल्पना पवित्रता के आधार से ही की जा सकती है। ये भी शास्त्रगत है कि जब ऋषि-मुनि पवित्र थे दुनिया में तो उनको कोई हिंसक जानवर तक भी नहीं छू पाते थे। तो आप सोचिए, आज भी यदि हम उस स्नेह को, उस भाव को लाते हैं तो निश्चित रूप से हमारी, प्रत्येक मनुष्य और सबकी विकारी दृष्टि से रक्षा होगी और हम खुद को सुरक्षित भी महसूस करेंगे। तो आज रक्षाबंधन के पर्व पर पवित्रता से खुद को रक्षित करना है और प्रतिज्ञा करनी है कि न हम विकृत भाव रखेंगे और न ही हम किसी को दुःख देंगे। कहते हैं, पवित्रता सुख-शांति की जननी है। तो परमात्मा द्वारा पवित्र सृष्टि की स्थापना के भगीरथ कार्य में इस रक्षाबंधन पर पवित्रता का सूत्र बांध कर अपना योगदान देंगे।

दादी प्रकाशमणि जी से रूह-रिहान करने के पश्चात् दृष्टि लेते हुए ब्र.कु. गंगाधर,सम्पादक,ओम शान्ति मीडिया,माउण्ट आबू।

जीवन भल चला जाये... पर खुशी न जाये

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

दादी कहती थीं कि बाबा ने कहा कि जीवन भल चला जाए पर खुशी न जाए। हमारी दादी जी सबके दिल की प्यारी और अति न्यारी, सर्व के दिलों में प्यार की, रहम की और सहयोग की छाप लगाने वाली सर्वस्नेही थीं।

जिस प्रकार गलती करने के बाद यदि हिम्मत करके बाबा के पास कोई भी आता तो बाबा उसको बड़े प्यार से बिठाते और टोली खिलाते थे। उसी तरह दादी जी के पास भी जब कोई आता था तो दादी जी बड़े प्यार से उससे बात करती थीं। दादी जी कभी किसी की गलती याद नहीं दिलाती थीं। गलती करने वाला स्वयं ही अपने आपको इतना एहसास दिलाता था कि वो भविष्य में उस भूल को कभी नहीं दोहराएगा।

यदि किसी छोटी बहन ने दादी जी को सुनाया कि आज मुझे बहुत रोना आया, फीलिंग आई, तो दादी कहती थीं कि कोई बात नहीं, आप छोटे हैं ना और वो बड़ी हैं, तो आज आप थोड़ी देर के लिए खुद को बाबा के साथ रखकर देखो कि आपको कैसा लगता है। दादी जी ऐसे प्यार से छोटी-छोटी बातें करके बहलाती थीं। लेकिन उस बड़ी बहन को कभी उलहना नहीं देती थी कि तुमने ऐसा क्यों कहा। उसे बहुत प्यार देकर उसके मन को ठीक कर देती थीं। दादी जी क्लास भी कराती थीं और सब कायदे कानून भी समझाती थीं। लेकिन व्यक्तिगत मिलन में सीधा ऐसे नहीं कहती थीं कि तुमने ऐसा किया।

दादी कहती थीं कि बाबा ने कहा कि जीवन भल चला जाए पर खुशी न जाए। हमारी दादी जी सबके दिल की प्यारी और अति न्यारी, सर्व के दिलों में प्यार की, रहम की और सहयोग की छाप लगाने वाली सर्वस्नेही थीं। दादी हम सभी ब्राह्मणों के दिलों में समाई हुई है। दादी देहातीत अवस्था को प्राप्त कर चुकी थीं, इसलिए उन्हें बीमार होते भी सदा शांत व हर्षित देखा। उन्हें दुःख रिचक मात्र भी छू नहीं पाया, ये कमाल हम सभी महसूस करते थे। दादी सभी को शिक्षा देती थीं कि पेशेन्ट होते हुए पेशेन्स की स्थिति में रहना क्या होता है। दुःख की लहर तो स्वप्न मात्र भी नहीं थी, क्योंकि ब्राह्मण जन्म से ही दादी ने पुरुषार्थ में कोई कमी नहीं की। दादी हमेशा कर्मातीत अवस्था की धुन लगाई हुई थीं। बाबा ने भी इसलिए कहा था कि ये मेरी एकदम सहयोगी, स्नेही और समान बच्ची है। वे सदा निर्विघ्न, स्वमानधारी, सम्मानधारी मूरत होने के कारण किसी भी विघ्न के वश नहीं हुईं। सदा विजयी रहीं। दादी जी के साथ बिताया हुआ हर एक क्षण मधुर स्मृतियों से भरा हुआ है।

वे कोई बात बोलती थीं और थोड़ी देर बाद हमने देखा कि वे साइलेंस में चली जाती थीं। जब दादी से कोई कहता कि दादी आपने ये काम करवाया तो दादी थोड़ी देर तक तो सुनती रहती थीं, उसके थोड़ी देर बाद अंगुली ऊपर इशारा करके कहती थीं कि ये काम बाबा ने कराया। करनकरावनहार बाबा है, मैं तो निमित्त हूँ। दादी जी सबकी विशेषताओं का वर्णन बहुत अच्छे तरीके से करती थीं।

जब कोई भी पार्टी आती थी बाबा से मिलन मनाने तो वे उस पार्टी के लिए स्पेशल इंतज़ाम कराती थीं, उनके लिए पूछती थीं कि आज भंडारे में क्या बना है, उनके हिसाब से अलग-अलग बाबा के भोग बनवाती थीं। हमे भी उनका बहुत रिगार्ड है, हम उनके अंग-संग रहे। हमें उनसे बहुत कुछ सीखने को मिला।

जहाँ पड़े कदम...वहाँ रचा स्थापना का एक नया इतिहास

राजयोगिनी दादी जानकी जी

दादी प्रकाशमणि को मैं बचपन से जानती हूँ। सन् 1936 में, सिंध हैदराबाद में जब ओम मण्डली की शुरुआत हुई तो एक स्नेहमयी, लगनशील, आज्ञाकारी कुमारी के रूप में उनका पदार्पण हुआ। आते ही उनके हृदय में ईश्वर तथा ईश्वरीय परिवार के प्रति भरपूर प्यार देखा। उनका मन-वचन-कर्म हमेशा विशेषता संपन्न रहा, कभी साधारण चाल चलन की तो झलक भी नहीं आई। प्यारे बाबा ने भी उनको आते ही टीचर का पदभार सम्भलवा दिया। छोटे बच्चों की तो वे दिव्य शिक्षिका थीं ही, कुँज भवन में बड़ों के बीच भी टीचर की भूमिका बहुत अच्छी निभाते देखा। जीवन के हर कर्म में चाहे स्थूल हो या सूक्ष्म, उनको सदा कुशल ही देखा। बाबा द्वारा बनाए गए नियमों के पालन में हमारे सामने सैम्पल बनकर रहीं।

जब हम कराची में थे तो प्यारे बाबा उनको ईश्वरीय सेवा के विभिन्न निर्देश देते थे जैसे कि कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में ईश्वरीय संदेश भेजो आदि-आदि। दादी जी बड़ी तत्परता से इन सभी को असल में लाती थीं। वे बाबा के निर्देश, श्रीमत तथा इशारे को तुरंत पकड़ती थीं और पूरा करके दिखाने में हमारे लिए मार्गदर्शिका की भूमिका निभाती थीं।

जब आबू में आए तो स्थान, वातावरण, परिस्थितियाँ बदलने के कारण भिन्न-भिन्न बातें परीक्षा के रूप में सामने आईं पर दादी जी को हर परिस्थिति में अचल-अडोल देखा। कभी उनको व्यर्थ संकल्प व बोल में नहीं देखा। सेवा के क्षेत्र में भी, उनका जहाँ-जहाँ कदम पड़ा, वहाँ-वहाँ स्थापना का नया इतिहास रचा गया। दादी ने सभी को धैर्य, आशा और उमंग का पाठ पढ़ाया। यज्ञ-परिवार में दिल से दिल मिलाने में और दिलाराम भगवान से दिल का प्यार पाने में प्रेरणाएँ भरीं। बाबा के अव्यक्त होने पर मेरे मन में प्रश्न था कि अब मुरली कौन सुनायेगा? प्यारे बाबा ने कहा, दादी(प्रकाशमणि) मुरली सुनायेंगी और पुरानी मुरलियाँ दोहराई जायेंगी। सचमुच, दादी जी ने ऐसी मुरली सुनाई जो साकार बाबा की भासना हमें मिलती रही। सन् 1974 में दादी और दीदी, दोनों ने मुझे विदेश सेवा के लिए भेजा। प्यारे बाबा की श्रीमत और बड़ों की दुआओं से जर्मनी, अफ्रीका, कनाडा, करेबियन आदि स्थानों पर सेवा का बीज पड़ा। सन् 1977 में दादी हमारे पास आईं। दादी ने ही लंदन में ट्रैफिक कंट्रोल प्रारंभ करने का इशारा दिया।

जब दादी विदेश के दौरे पर आती थीं। मुझे ये भासना आती थी कि दादी नहीं, स्वयं बाबा ही आए हैं। यह मेरा महान भाग्य है कि ऐसी महान दादी ने सदा ही मुझ पर हक रखा। मैंने भी दादी की समीपता का बहुत सुख पाया है। दीदी मनमोहिनी जी ने सन् 1983 में जब देह त्याग किया तो सभी का विचार था कि शायद अब मुझे मधुबन में ही रखेंगे परन्तु मीठी दादी ने ही उमंग दिलाकर मुझे विश्व सेवा पर भेजा।

मधुबन मुख्यालय की ज़िम्मेवारियाँ निभाते हुए दादी स्वयं भी विश्व सेवा पर जाती रहीं और जहाँ-जहाँ उनके कदम पड़े, वहाँ-वहाँ ईश्वरीय सेवा के नये बीज अंकुरित हुए, सेवा वृद्धि को पाती गई। देखते ही देखते आज हमारे सामने ग्लोब पर बाबा का परचम लहराया।

सच्चाई-सफाई है... तो निर्मान हैं

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

जिस तरह बिजली की लाइन क्लीयर होती है तो रोशनी पहुंचती है। ऐसे जब अपनी बुद्धि की लाइन क्लीयर है, अपने सूक्ष्म संकल्प एक बाबा के ही साथ जुड़े हुए हैं, बुद्धि में सदा ज्ञान का मनन चिंतन है, सदा सेवा में, बाबा के गुण व शक्तियों को धारण करने में ही तत्पर हैं तो कनेक्शन ठीक होने से, सर्व शक्तियों की लाइट से स्वयं की चेकिंग यथार्थ होती रहती है। अगर कनेक्शन राइट नहीं है तो खुद की चेंकिंग भी नहीं कर सकते। यदि मेरी बुद्धि की लाइन क्लीयर है, कनेक्शन ठीक है तो बापदादा व दैवी परिवार से यह सर्टीफिकेट मिल जाता कि मैं सच्चे बाप से सदा सच्ची हूँ। मेरी दिल साफ है अर्थात् मन में जो भी संकल्प उठते हैं, वह भी सच्चे हैं। सच्चाई और सफाई इन दोनों शब्दों का भी अर्थ है। एक तो मैं सत्य बाप के सत्य ज्ञान के पथ पर हूँ, इसलिए मैं सत्य हूँ। एक है सत माना अविनाशी हूँ, एक है सत्य माना सच्ची हूँ। फिर है सफाई। जैसे घर में कोई किचड़पट्टी न हो तो कहते बहुत सफाई है।

दूसरा है मेरे दिल में कोई भी व्यर्थ किचड़ा नहीं है। माना न मेरे में इम्प्युरिटी का किचड़ा है, न झूठ-चोरी या ठगी का किचड़ा है। ऐसे स्वभाव, संस्कारों का भी मेरे में कोई गंद नहीं है। किसी प्रकार की झरमुई-झगमुई, परचिंतनों का भी मेरे में किचड़ा नहीं है। दूसरों के प्रति दोष दृष्टि रख देखना, दोष दृष्टि रख व्यवहार करना, खुद को निर्दोषी और दूसरों को दोषी बनाना - यह भी सफाई नहीं है। जिसमें खुद का देह अहंकार होगा, वह कभी भी दिल का साफ नहीं होगा। उसके अन्दर अभिमान का नशा होगा। और सच्चाई वाला सदा निर्मान होगा। जिसमें निर्मानता नहीं है, अंडरस्टूड है कि उसके अन्दर देह अभिमान है, देह अभिमान है माना वह साफ नहीं है, उसके अन्दर दूसरों के प्रति दोष दृष्टि रहती।

साफ दिल वाला अपनी गलतियों की करेक्शन करेगा, रियलाइज़ करेगा। कई बार कईयों को रॉन्ग-राइट की भी रियलाइज़ेशन नहीं होती। समझाओ तो भी समझेंगे नहीं। रियलाइज़ नहीं करेंगे कि मैं किस बात में रॉन्ग हूँ या किस बात में राइट हूँ। तो यह रियलाइज़ेशन की शक्ति भी दिल की सफाई से आती है। जो एक सेकण्ड में रियलाइज़ कर लेते हैं उसे करेक्शन करना भी सहज हो जाता है। दूसरे के कहने से पहले वह खुद को ही रियलाइज़ कर परिवर्तन कर लेते हैं।

सच्चाई वाला, साफ दिल वाला कभी किसके संगदोष में नहीं आता। संग का दोष लगता ही उसे है जिसका कनेक्शन टूटा हुआ है अथवा जो साफ दिल नहीं है। जहाँ साफ दिल नहीं वहाँ ज़रूर कोई खोट है, झूठ है। तो वह संगदोष में जल्दी आ जायेगा। जैसे सोना है वह साफ है, सच्चा है तो जल्दी आ जायेगा। जैसे सोना है वह साफ है, सच्चा है तो उसकी वैल्यू है और जब उसमें झूठ अर्थात् अलाएं पड़ जाती हैं तो उसकी वैल्यू चली जाती। उसको कहेंगे मिक्स सोना। तो यह संगदोष भी हमारी स्थिति को बहुत खराब करता है। एक-दूसरे की सच्ची लगन को तोड़ता है। बाबा से लगन तभी टूटती है जब लाइन क्लीयर नहीं है फिर संग का दोष लग जाता है और जहाँ संग का दोष लगा वहाँ निश्चय बुद्धि के बदले संशय ज़रूर पैदा होगा। संशय भी अनेक प्रकार का है। एक संशय है जो मैं मानती ही नहीं कि बाबा कौन है। एक सूक्ष्म संशय है जो श्रीमत का उल्लघंन करते। मर्यादा उल्लंघन करता ही वह है जिसके दिल में सच्चाई-सफाई नहीं है, जिसे बाबा के साथ का अनुभव नहीं है। बाबा साथ है तो कोई कैसी कठिन बात भी आये उसे वह सहज पार कर लेता है, जिसके लिए कहा जाता सच की नांव हिले पर डूबे नहीं।